Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

B. A. Part – III (Hons)

Paper – V

Philosophy of Religion

1

5. <u>टोटमवाद</u> (Totemism) 'टोटमवाद' से तात्पर्य टोटम में आस्था या टोटम के प्रति भक्तिभाव रखने से है। टोटम किसी जाति में वह पशु, पक्षी अथवा वस्तु कहलाती है जिसके प्रति उस जाति के लोग विशेष भक्ति-भाव रखते हैं। दूसरे शब्दों में वह वस्तु विशेष अथवा जीव टोटम कहलाती है जिसके साथ उस जाति के लोगों का रहस्यमय सम्बन्ध होता है। वे लोग टोटम का अत्यधिक सम्मान करते हैं और यदि टोटम पशु होता है तो उस पशु को कोई नहीं मार सकता तथा यदि टोटम कोई वृक्ष हो तो उसको कोई नहीं काट सकता सब उसके समक्ष से गुजरते हुए सब नतमस्तक होते हैं। जैसे— संथालों की एक उपजाति उर्गों है जिसका टोटम चूहा है इस जाति के सभी लोग चूहे के प्रति विशेष भक्तिभाव रखते हैं तथा चूहे को मारना, खाना, पकड़ना, जलाना आदि सभी कुछ वर्जित है। इसके अलावा

वे विवाह भी उसी जाति में करते हैं जिसका टोटम चूहा है। इसी प्रकार जिन जनजातियों का टोटम कोई वृक्ष होता है, वे उस वृक्ष को न तो काटते हैं और न उसका अन्य कोई उपयोग ही करते हैं।

टोटमवाद की अनेक परिभाषायें दी गयी हैं —

1. मैहर के अनुसार — "किसी गोत्र या कबीले के सम्बन्ध में टोटमवाद उस पद्धति को कहते हैं जिसके अनुसार किसी जनजाति का कोई उपभाग किसी विशेष जानवर अथवा वनस्पति से अपना विशिष्ट सम्बन्ध रखता है और यह दावा करता है कि उसका उसके साथ रहस्यमय सम्पर्क है।"

2. हॉबेल के अनुसार — "टोटम एक पदार्थ प्रायः एक पशु अथवा एक पौधा है जिसके प्रति एक सामाजिक समूह के सदस्य विशेष श्रद्धाभाव रखते हैं और जो यह अनुभव करते हैं कि उनके और टोटम के बीच भावनाओं की एकता का एक विशेष सूत्र है।"

3. हर स्कोविट्ज के अनुसार — "टोटमवाद उस धारणा और विश्वास को कहते हैं जिसके अनुसार किसी मानव समुदाय को किन्हीं वनस्पतियों, पशुओं या कभी-कभी प्राकृतिक पदार्थ के साथ दैवी सम्बन्ध माना जाता है।"

टोटमवाद के मूलभूत तीन लक्षणों का उल्लेख करते हुए मजूमदार मदन ने कहा है,
(i) एक पशु या वनस्पति के प्रति एक विशेष मनोभाव।
(ii) एक गोत्र संगठन।
(iii) गोत्र बहिर्विवाह

विभिन्न विद्वानों ने टोटम के उद्गम के विषय में अपने-अपने मत व्यक्त किये हैं जिनमें से कुछ प्रमुख इसप्रकार हैं —

1. हापकिन्स का मत — हापकिन्स ने यह माना है कि जिस जाति में जो पशु अधिक महत्व रखता है वही पशु उस जाति के लिए टोटम बन जाता है।

2. टाइलर का मत — टाइलर का यह मत है कि जिस प्राणी या वनस्पति के विषय में यह धारणा होती है कि आदिम मनुष्य की आत्मा मरने के पश्चात इस प्राणी या वनस्पति में रहती है वही प्राणी या वनस्पति उस जाति में 'टोटम' बन जाती है।

3. रिजले का मत — रिजले ने टोटम के उद्गम के विषय में यह माना है कि कुछ आकस्मिक सम्बन्ध का परिणाम भी टोटम हो सकता है। यदि कोई व्यक्ति चूहे को मार दे और उसे मारते ही वह अन्धा हो जाए तब यदि आगे इन दोनों घटनाओं में सम्बन्ध स्थापित करके चूहे को

प्रति आदर युक्त भय को उत्पन्न करें तो वह उस जाति के लोगों का टोटम बन जायेगा।

(५) शरदचन्द्र राय का मत :- शरदचन्द्र राय ने भी लगभग रिवर्स के ही मत का समर्थन करते हुए लोगों के टोटम का उदाहरण प्रस्तुत करते हुये यह मत व्यक्त किया है कि ऐसी किसी घटना के घटित होने पर जिसमें किसी विशेष प्राणी या वनस्पति द्वारा किसी व्यक्ति की प्राण रक्षा हुई हो तब उस प्राणी या वनस्पति के प्रति आदर युक्त भय की भावना उत्पन्न हो जाती है और इसी के फलस्वरूप वह प्राणी या वनस्पति उस जाति का टोटम बन जाती है।

(६) हट्टन का मत :— हट्टन ने टोटम के विषय में अपना मत व्यक्त करते हुए कहा है कि टोटम का उद्गम उस अवस्था एवं परिस्थिति का परिणाम रहा है जिसमें भोज्य वनस्पतियों का असाधारण महत्व था और इनमें भी खाने की नवीन वनस्पतियों की खोज सबसे भी अपना विशेष महत्व रखती थी क्योंकि इस समय वनस्पतियों का संग्रह बड़ा कठिन था। क्योंकि लोगों को यह आशंका रहती थी कि दूसरी जाति या गोत्र को यदि इसका पता लग गया तो यह समाप्त हो जायेगी इसलिये उसको छुपाने के लिए उसे आदर से देखा

जाने लगता था और वह उस जाति का टोटम बन जाती थी।

टोटमवाद की विशेषताएँ :-

(1) एक गोत्र के सभी व्यक्ति टोटम को अपनी जाति का मूल आधार मानते हैं तथा उनका उससे ही सम्बन्ध होने में विश्वास होता है।

(2) टोटम के साथ एक गोत्र अपना रहस्यमय सम्बन्ध मानता है।

(3) टोटम को आदर सहित भय की दृष्टि से माना जाता है इसलिये उसे मारने या उसका प्रयोग करने का निषेध होता है।

(4) टोटमवाद की प्रमुख विशेषता यह है कि उसके प्रति आदर, भक्ति तथा श्रद्धा की भावना होती है इसलिए उसके चित्र को शरीर के अंगों पर खुदवाया जाता है।

(5) विशेष उत्सवों या विशेष अवसरों पर टोटम की खाल पहनना आम माना जाता है।

(6) टोटम के मर जाने पर ठीक उसी प्रकार का शोक मनाया जाता है। जैसे किसी परिवार के व्यक्ति के मर जाने पर मनाया जाता है। इसके अलावा टोटम का भी उन्त्येष्टि संस्कार आदि उसी प्रकार किया जाता है जैसे परिवार के अन्य व्यक्तियों के मरने पर उनका किया जाता है।

(7) क्योंकि टोटम के साथ रहस्यमय अथवा अलौकिक सम्बन्ध माना जाता है इसलिए यह विश्वास किया जाता है कि टोटम उस गोत्र पर आने वाली आपत्तियों के विषय में भविष्यवाणी कर देता है तथा आपत्ति या खतरा आने पर उसकी रक्षा करता है।

(8) एक टोटम से सम्बन्धित सदस्य कभी भी आपस में विवाह नहीं करते अर्थात् टोटमवाद में टोटम समूह बाहिर्विवाह प्रथा होती है।

उपर्युक्त विशेषताओं से स्पष्ट है कि जनजातियों की सामाजिक व्यवस्था को संगठित एवं व्यवस्थित करने में टोटम का महत्वपूर्ण योगदान होता है तथा इनमें सामुदायिक भावना एवं भ्रातृत्व की भावना का आधार टोटम ही होता है।

टोटम के प्रकार :→ इस संदर्भ में मार्टिन ने दक्षिणी भारत में लगभग सभी जानवरों और वृक्षों के नाम के टोटम हैं। इस रूप में टोटमों के प्रकारों का उल्लेख सम्भव नहीं है किन्तु इन टोटमों के आधार पर जो जनजातियों में से उपजातियाँ बनी हैं उनका उल्लेख किया जा सकता है। इसप्रकार ओरांवों के 73 उपभेद हैं तथा संथालों में 93 उपभेद हैं।

भीलों के मुख्य टोटम

पीपल, बाँस, पतंगा, साँप, चीता तथा गाम्बोला नामक लता है।